

Part A

सी सी टी साप्ताहिक अभ्यास

आकाशवाणी का दौरा



यह पाठ, रोहन का अपने मित्रों के साथ दिल्ली आकाशवाणी केंद्र के रोचक दौरे को, अपने सहपाठियों को लिखे गए एक पत्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

प्यारे दोस्तों,

मैं आपका दोस्त रोहन, कक्षा नौ में पढ़ता हूँ। दोस्तों मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। मैं जानता हूँ कि पढ़ाई-लिखाई करके ही मैं अच्छा और सम्मानित जीवन जी सकता हूँ और अपने देश की सेवा और उसका नाम रौशन कर सकता हूँ। लेकिन दोस्तों में जानार्जन केवल पुस्तकों के माध्यम से ही नहीं करता बल्कि खेल-कूदकर, कुछ नया सीखकर, दूसरों की मदद करके और सैर तथा यात्राएँ करके भी करता हूँ। इस सब से मुझे व्यावहारिक ज्ञान भी हासिल होता है और नई-नई जानकारीयाँ भी मिलती हैं।

दोस्तों कुछ समय पहले मुझे अपने कुछ मित्रों के साथ दिल्ली के आकाशवाणी केंद्र जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ का अनुभव बड़ा ही अनूठा और रोचक था। चलो ! आज शब्दों के माध्यम से आप को भी आकाशवाणी की सैर करवाता हूँ और अपने अनुभवों को आपसे साझा करता हूँ।

पुराने दिनों में जब टी.वी. नहीं हुआ करता था तब रेडियो ही मनोरंजन का एकमात्र साधन था। रेडियो के 'जिंगल' से ही दिन की शुरुआत होती थी। तड़के सुबह वाद्य-यंत्रों से सजा यह जिंगल बजता तो दिल्ली जागती थी। वाद्य यंत्रों का सुरीला स्वर कानों में मिसरी सी मिठास घोल जाता था। इस जिंगल या स्वर-लहरी को वाल्टर कॉफ़मैन ने बनाया था। वे वर्ष 1934 में भारत आए थे और 'ऑल इंडिया रेडियो' के संगीत निदेशक बने।

13 फरवरी को ' विश्व रेडियो दिवस ' के रूप में मनाया जाता है। 'ऑल इंडिया रेडियो ' (ए.आई.आर.) की स्थापना वर्ष 1936 में हुई थी। इसे आधिकारिक तौर पर 1956 से आकाशवाणी ("वॉयस फ्रॉम द स्काई") के रूप में जाना जाता है। यह भारत का राष्ट्रीय सार्वजनिक रेडियो प्रसारक है। यह प्रसार भारती का एक प्रभाग है और दूरदर्शन की सहायक सेवा है , जो कि भारत सरकार का टेलीविजन प्रसारक है। नई दिल्ली में स्थित आकाशवाणी भवन में इसका मुख्यालय है और यह नाटक अनुभाग , एफएम अनुभाग , राष्ट्रीय सेवा , और

भारतीय टेलीविजन स्टेशन दूरदर्शन केंद्र, (दिल्ली) का भी घर है। ए.आई.आर., प्रसारण की जाने वाली भाषाओं की संख्या और इसके द्वारा संचालित सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक विविधता के संदर्भ में दुनिया के सबसे बड़े प्रसारण संगठनों में से एक है।

दिल्ली का आकाशवाणी भवन का परिसर बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है। इसमें दो इमारतें हैं - एक मुख्य इमारत और दूसरी नव प्रसारण भवन। जैसे ही हमने आकाशवाणी भवन में प्रवेश किया वहाँ के स्वागतकक्ष में स्वागतकर्ता ने हमारा प्रवेश-पत्र बनाया और हमें अंदर प्रवेश की अनुमति दी। एक गलियारे से होते हुए हमने आकाशवाणी केंद्र की मुख्य इमारत में जैसे ही कदम रखा वहाँ के बड़े-बड़े दरवाजों ने हमारा स्वागत किया। वहाँ बीचो-बीच पूरी इमारत का एक छोटा मॉडेल रखा हुआ था और उसके इर्द-गिर्द पुराने ज़माने के रेडियो सेट और अन्य सामग्री प्रदर्शनी के तौर पर रखी हुई थी। यह छोटी सी प्रदर्शनी आकाशवाणी की आज तक की यात्रा को प्रदर्शित कर रही थी। इस दो-मंजिला गोलाकार इमारत में ऊपर एक पट्टिका पर आकाशवाणी का ध्येय वाक्य **"बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय"** लिखा हुआ था। एक पट्टिका पर महात्मा गांधी के दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र में आने की तिथि भी अंकित थी, जिसे 'प्रसारण दिवस' के रूप में मनाया जाता है। गाँधी जी ने इसके स्टूडियो-3 से, पाकिस्तान से हरियाणा आनेवाले शरणार्थियों के नाम संदेश दिया था। गाँधी जी का इस केंद्र में बस एक ही बार आना हुआ था।

दोस्तों, रविवार का दिन था इसलिए सभी कार्यालय तो बंद थे लेकिन स्टूडियो में बाल-कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग चल रही थी। कार्यक्रम का नाम था "चुनमुन"। है न कितना प्यारा नाम! मुझे न केवल स्टूडियो में बैठने का सौभाग्य मिला बल्कि रिकॉर्डिंग का मौका भी मिला। बहुत सारे बच्चे अपने माता-पिता या शिक्षकों के साथ आए हुए थे। जितने भी चुनमुन दोस्त बैठे थे सबसे झटपट हमारी दोस्ती हो गई। हमारे दो दोस्त कार्यक्रम का संचालन करते हुए बहुत अच्छी-अच्छी बातें कर रहे थे। बच्चे कविता, नाटिका, चुटकुले, गीत, पहेलियाँ, दोहे, चौपाई आदि की रिकॉर्डिंग करवा रहे थे। सभी दोस्तों की प्रस्तुति बहुत ही प्रतिभाशाली और बढ़िया थी।

कार्यक्रम निष्पादक ने हमें बताया कि आकाशवाणी सूचना, शिक्षा और मनोरंजन को ध्यान में रखकर कार्यक्रम तैयार करता है। समय-समय पर यहाँ के केंद्र पर बहुत सारे महान कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं। शास्त्रीय संगीत, फ़िल्मी संगीत, लोकसंगीत सभी को रेडियो पर सुना जा सकता है। यहाँ से बच्चों, युवाओं, महिलाओं की रुचि को ध्यान में रखते हुए विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। समाचार, सूचनाएँ, स्वास्थ्य, विज्ञान, कला, खेल, आर्थिक गतिविधियों, जीवनशैली से जुड़े सभी विषयों पर रोचक अंदाज़ में कार्यक्रम बनाकर श्रोताओं तक पहुँचाए जाते हैं। फ़ोन के माध्यम से श्रोताओं के सवालों के जबाब भी दिए जाते हैं।

माइक पर बोलकर मुझे न केवल अच्छा लगा बल्कि आत्मविश्वास भी उत्पन्न हुआ। आकाशवाणी के माइक सामान्य माइक से अलग थे (रेडियो माइक आमतौर पर वाइडबैंड आवृत्ति मॉड्यूलेशन का उपयोग करते हैं जिससे उच्च कोटी की ध्वनि उत्पन्न की जा सके) और स्टूडियो की दीवारें भी बिल्कुल अलग तरीके से बनी

हुई थीं। पूरी दीवारों में छेद थे जिससे आवाज़ में गूँज उत्पन्न न हो। दरवाज़े बहुत भारी थे जिससे बाहर की कोई अनैच्छिक ध्वनि अंदर न आ सके।

रिकॉर्डिंग के बाद हमने आकाशवाणी परिसर को और नज़दीक से देखा। वहाँ संगीत स्टूडियो, वार्ता स्टूडियो, नाटक स्टूडियो और भी बहुत सारे स्टूडियो थे। रिकॉर्डिंग के पश्चात् कार्यक्रम को प्रसारण के लिए तैयार करने के लिए डबिंग और एडिटिंग कक्ष भी काफी संख्या में बने हुए थे। इन कक्षों में कार्यक्रम को गीत-संगीत से सजाया जाता है। आवाज़ की गुणवत्ता को भी ठीक किया जाता है तथा अनावश्यक ध्वनियों को हटाया जाता है, यानि एडिटिंग करी जाती है।

यहाँ परिसर में शास्त्रीय संगीतज्ञों, गायकों और कवियों के चित्र भी लगे हुए हैं, जिन्हें देखकर मन श्रद्धा से भर जाता है। यहाँ एक तकनीकी कक्ष और एक बहुत बड़ा पुस्तकालय भी है। आकाशवाणी परिसर में एक बहुत सुंदर ऑडिटोरियम है। ऑडिटोरियम का नाम है 'रंग भवन'। इसकी साज-सज्जा देखने लायक है। आधुनिक तकनीक से युक्त इस ऑडिटोरियम में आकाशवाणी के खास समारोह आयोजित किए जाते हैं।

इसके बाद हमें विशेष अनुमति प्राप्त करके, नव प्रसारण भवन देखने का भी अवसर मिला। यहाँ स्टूडियो से सीधा प्रसारण किया जा रहा था। प्रस्तुतकर्ता बहुत ही सधी हुई आवाज़ और बहुत सुंदर भाषा में कार्यक्रम की प्रस्तुति कर रही थीं। हमें कुछ बातें बहुत अच्छी लगीं जैसे आकाशवाणी के कार्यक्रमों में समय का बहुत ध्यान रखा जाता है। शांति बनाकर रखना ज़रूरी है क्योंकि माइक अत्यंत संवेदनशील होते हैं और अगर उसके आसपास कोलाहल या ज़रा सी भी अनैच्छिक ध्वनि हो तो वो उसको तुरंत पकड़ लेते हैं। सीधा प्रसारण होने के कारण प्रस्तुतकर्ता को बहुत ही एकाग्रचित्त होकर कार्य करना पड़ता है।

इस तरह दोस्तों यहाँ आकर एक ऐतिहासिक इमारत के ही दर्शन नहीं हुए बल्कि यह भी मालूम पड़ा की स्वर, आवाज़, ध्वनि, शब्द व भाषा में वह शक्ति है जो तरंगों के माध्यम से और तकनीक के सहयोग से दूरदराज़ के इलाकों के व्यक्ति को भी अपने से जोड़ सकती है और लाभ पहुँचा सकती है। हमारी आकाशवाणी केंद्र की यह यात्रा तो ज़रूर समाप्त हो गई लेकिन हमें यह शिक्षा दे गई कि हमें भी जीवन में बिना रुके, बिना थके आकाशवाणी के ध्येय वाक्य "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के सिद्धांत पर कार्य करना चाहिए।

आपका प्यारा मित्र और सहपाठी

रोहन

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए :-

क) 'विश्व रेडियो दिवस' किस दिन मनाया जाता है?

ख) "वॉयस फ़ॉर्म द स्काई" के रूप में किसे जाना जाता है?

ग) आकाशवाणी की जिंगल या स्वर-लहरी को किसने बनाया था?

घ) आकाशवाणी के ध्येय वाक्य क्या है?

ड) गाँधी जी ने कौने से स्टूडियो से पाकिस्तान से हरियाणा आए शरणार्थियों को संबोधित किया था?

2. दिल्ली आकाशवाणी केंद्र के नव प्रसारण भवन से सीधा प्रसारण किया जाता है। सीधे किये जाने वाले प्रसारण में किन बातों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है?

क) _____

ख) _____

ग) _____

घ) _____

3. अकाशवाणी के रिकॉर्डिंग स्टूडियो की दीवारों इत्यादि का अलग तरीके से बने होने का कारण है :-

क) जिससे आवाज़ में गूँज उत्पन्न न हो और बाहर से कोई अंदर न आ सके।

ख) जिससे आवाज़ गूँज सके और बाहर से कोई अंदर न आ सके।

ग) जिससे आवाज़ में गूँज उत्पन्न न हो और बाहर से कोई अनैच्छिक ध्वनि अंदर न आ सके।

घ) जिससे अंदर की आवाज़ बाहर न जा सके और बाहर से कोई ध्वनि अंदर न आ सके।

4. पाठ में 'र' अक्षर के विभिन्न स्वरूपों का प्रयोग अनेक शब्दों में हुआ है। नीचे दिए गए शब्दों में 'र' के तीनों रूपों (^ ऋ र) का उचित स्थान पर प्रयोग करते हुए सही शब्द बनाइए :-

पूण पमोद निवाह कषक

निमाण राष्ट मेटो तण

पाथना कत्तव्य महषि पणाम

बफ़ टक वक्ष संगह

5. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा शब्द छाँटकर सही जगह पर लिखिए:-

दोस्त आकाशवाणी श्रद्धा दिल्ली निष्पादक
शक्ति जानार्जन भारत माइक

व्यक्तिवाचक संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा

भाववाचक संज्ञा

रचनाकार :-

ऋतु भटनागर

Part B

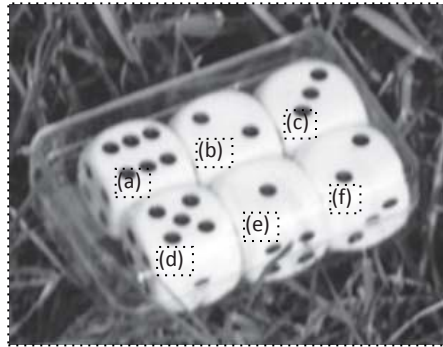
संख्या क्यूब

पासा विशेष संख्या के घन होते हैं जिसके लिए निम्नलिखित नियम लागू होते हैं:

दो विपरीत फलकों पर डॉट्स की संख्याओं का योग हमेशा सात होता है

प्रश्न 10: इस तस्वीर में आप छह पासे देखते हैं, लेबल (a) से (f) तक ।

प्रत्येक बॉक्स में फोटोग्राफ के अनुसार पासे के निचले फलक पर डॉट्स की संख्या लिखें।



(a)	(b)	(c)
(d)	(e)	(f)

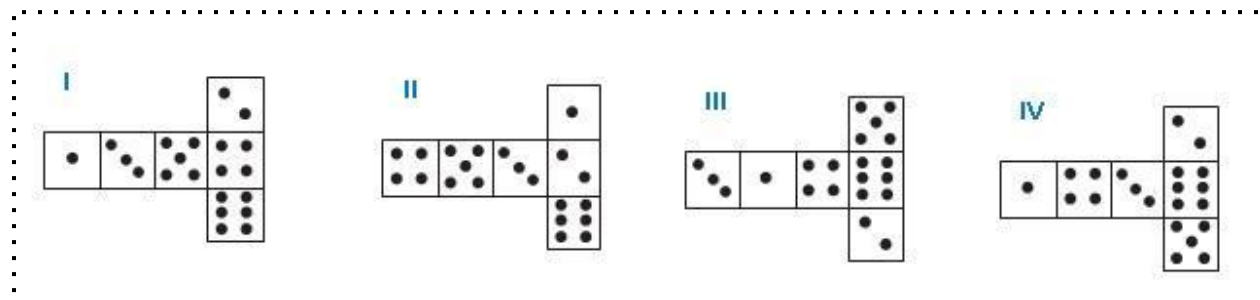
प्रश्न 11: दाईं ओर दो पासे का चित्र है।

आप कार्डबोर्ड को काटकर, मोड़कर और चिपकाकर एक साधारण संख्या क्यूब बना सकते हैं। यह कई तरीकों से किया जा सकता है।



नीचे दिए गए चित्रों में आपको चार कटिंग, फलकों पर डॉट्स के साथ दी गई हैं जिनका उपयोग संख्या क्यूब बनाने के लिए किया जा सकता है ।

निम्नलिखित में से कौन सी आकृतियों को जोड़कर एक घन बनाया जा सकता है जो इस नियम का पालन करता है कि विपरीत फलकों का योग 7 है ? प्रत्येक आकृति के लिए, नीचे दी गई तालिका में "हां" या "नहीं" विकल्प चुनें ।



आकृति	नियम का पालन करता है कि विपरीत चेहरों का योग 7 है?
I	हाँ / नहीं
II	हाँ / नहीं
III	हाँ / नहीं
IV	हाँ / नहीं

Part A

सी सी टी साप्ताहिक अभ्यास

आकाशवाणी का दौरा

उत्तर

- (क) 13 फरवरी
(ख) ऑल इंडिया रेडियो
(ग) वाल्टर कॉफ़मैन
(घ) "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय"
(ङ) दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र के स्टूडियो-3
- (क) प्रस्तुतकर्ता को बहुत ही सधी हुई आवाज़ और सुंदर भाषा में कार्यक्रम की प्रस्तुति करनी होती है।
(ख) समय का बहुत ध्यान रखा जाता है।
(ग) शांति बनाकर रखना ज़रूरी है।
(घ) प्रस्तुतकर्ता को बहुत ही एकाग्रचित्त होकर कार्य करना पड़ता है।
- (ग) जिससे आवाज़ में गूँज उत्पन्न न हो और बाहर से कोई अनैच्छिक ध्वनि अंदर न आ सके।
- | | | | |
|-----------|---------|---------|--------|
| पूर्ण | प्रमोद | निर्वाह | कृषक |
| निर्माण | राष्ट्र | मेट्रो | तृण |
| प्रार्थना | कर्तव्य | महर्षि | प्रणाम |
| बर्फ | ट्रक | वृक्ष | संग्रह |
- | व्यक्तिवाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|--------------------|-----------------|----------------|
| आकाशवाणी | दोस्त | श्रद्धा |
| दिल्ली | निष्पादक | शक्ति |
| भारत | माइक | ज्ञानार्जन |

रचनाकार :-

ऋतु भटनागर

The solution for Part B is explained in Video Solution.